॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

साढ़े तीन यार का

अपूर्व क़िस्सा

पहिला भाग

जिसको

यन्त्रालय के श्रेष्ठ विद्वानों ने अतिपरिश्रम से शोधा

द्वितीय बार

लखनऊ

सुपरिंटेंडेंट बाबू मनोहरलाल भार्गव बी. ए., के प्रबन्ध से

मुंशी नवलकिशोर सी. आई. ई., के छापेखाने में छपा

सन् १९१२ ई०

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

क़िस्सा साढ़ेतीनयार का

॥ दोहा ॥

धन दैके जिय राखिये, ज़िय दै राखिये लाज।
धन दै जिय दै लाज दै, एक प्रीति के काज ॥
प्रीति निबाहन कठिन है, भूलि न कीजै कोय।
श्रीराम निबहै नहीं, दुःख दुहुंनै को होय॥

किसी एक शहर में साढ़े तीन यार थे, एक तो यार थे, एक तो उसी शहर का ख़ज़ा-नची था दूसरा फ़ौजका मालिक (कमान्डरे-इनचीफ़) था तीसरा गन्धीगर था उसकी बड़ी भारी दूकान इतर फुलेल की थी कि

जिसकी तारीफ़ दूर २ तक होरही थी ऐसा इतर दूर २ शहरों में नहीं मिलता था यह तीनों यार अपने २ घर के रईस भी थे और बड़ी २ जगहों पर थे एक यार ब्राह्मण का लड़का जोकि महाग़रीब था जिसको इस क़िस्से में आधा यार शुमार किया है उन तीनों यारों से उम्र में भी कम था और भीख मांगकर अपना दिन काटता था ।

इन चारों की ऐसी दोस्ती थी कि जिसकी तारीफ़ लिखने से एक बहुत बड़ी किताब बन जायगी एक दिन का ज़िक्र है कि चारों यार बग्घी में सवार होकर हवा खाने को गये उसी शहर के बाहर एक बड़ा भारी बाग़ था जिसके बीच में तालाब और उसके चारों तरफ़ तरह २ के फूल खिले हुए थे ।

बाग़ के दरवाज़े पर बग्घी खड़ी करके

चारों यार बाग़ के अन्दर गये और इधर उधर टहलने लगे फूलोंकी तर खुशबूसे दिल को खुश करने लगे, तरह २ के दरख़्त लगे हुए थे कलियों पर जिधर तिधर भँवर गुञ्जार कर रहे थे चारों तरफ़ से तर हवा दिमाग़ को तर कर रही थी डाली २ पर बैठी बुलबुलें चहचहा रही थीं ये सब के सब चारों यार बाग़ की बहार में मशगूल हुए।

थोड़ी देर के बाद उसी शहर के राजा की लड़की जिसका नाम चन्द्रमुखी था अचानक एक सहेली को साथ लिये हुए बाग़ में आई और इधर उधर टहलने लगी जहां तहां फूल टूटे हुए पड़े देख कर चन्द्रमुखी ने सखी से कहा मालूम होता है कि कोई शख़्स बाग़ में आया था, सखी कहने लगी न जाने किस की मुसीबत लाई हो। इस बात को अभी

कोई नहीं जानता है कि आप [राजकुमारी] का बाग़ है इस कारण कोई धोखे से शायद आगया होगा।

यह बात चीत चन्द्रमुखी की उन चारों यारोंके कान में पड़ी इधर उधर देखा तो चन्द्र-मुखी खड़ी नज़र आई यह चारों उसको देखते ही इधर उधर दरख़्तों के नीचे छिप गये कि बड़ा भारी धोखा हुआ यह ज़नाना बाग़ इसी राजकुमारी का है हमलोग इसमें नाहक़ आ फँसे ख़ैर अब इसी तरह छिपे रहें जब यह चली जायगी तब यहां से उठ कर चलेंगे।

चन्द्रमुखी घूमते २ इन लोगों की तरफ़ को आई एक चमेली के दरख़्तके पास खड़ी होगई गन्धीगर जिसका नाम अविनाशचन्द्र था उसी दरख़्त के नीचे बैठा हुआ था चन्द्र-

मुखी के चन्द्रमुख को देखकर शिर नीचे को कर लिया चन्द्रमुखी की खूबसूरती का बयान कहां तक किया ज़ाय वास्तव में मुख चन्द्रमा ही के समान था नेत्रों की चञ्चलता गोया कलेजा पार किये जाती थी जिसकी मस्त चाल ने हाथी की चाल को भी मात किया था। जिसकी तरफ़ निगाह उठाके ताक दे वही ज़िन्दगी मे हाथ धो बैठे।

॥ दोहा ॥

श्रीराम वा रूप को, कहँ लग कहूं बयान।
नैना जाके.बाण हैं, भृकुटी तनी कमान॥

॥ कवित्त ॥

चाहे बचिजाय तलवार घाव लागि जाय,
चाहै बचिजाय हिय हाथी किये गौन में।

चाहै बचिजाय पानी माहिं डूबिजाय अरु,
चाहै बचिजाय सोये आग लागे भौन में॥
चाहै बचिजाय सिंह सर्प आदि खांय धाय,
चाहै बचिजाय दूरि उड़ि जाय पौन में।
बचै ना कुमार नार नैनन की जाके हिये,
चोट बरछी सी लगै तिरछी चितौन में॥

॥ दोहा ॥

तड़पै थोड़ी देर लो, लगै काल को तीर।
नैन बाण जाके लगैं, उठि मांगै नहिं नीर॥

॥ कवित्त ॥

जाको रूप देखत ही चन्द्रमा लजाय जात,
जाके बैन सुनत पपीहा झख मारो है।
चाल मतवाली मानों मात करि हाथिनि हूँ,
नैनन को देखि मृग नीचे शीश डारो है॥

जाके केश देखत ही भँवर बराय जात,
लटन को देखि भाजि जात नाग कारो है।
श्रीराम वाको रूप कहां लों बखान करौं,
जाकी ओर देखै सोई तन मन वारो है॥

चन्द्रमुखी की नज़र अचानक नीचे की ओर पहुँची तो क्या देखती है कि नौजवान स्वरूपवान् मनुष्य ज़र्क बर्क़ पोशाक पहिने दरख़्त के नीचे बैठा है कि जिसकी ओर से तरह २ की खुशबूदार इतर की खुशबू आ-रही है चन्द्रमुखी ने मन में सोचा कि यह किसी राजा का लड़का मालूम होता है नहीं मालूम किस लिये इस बाग़ में अकेले द-रख़्त के नीचे बैठा है इसका भेद क्योंकर मा-लूम हो, यही दिल में सोच कर नज़र भर उसकी ओर देखा और उसका रूप देख कर मोहित हो गई। फिर वहां से ज़रा हट कर

दूसरी तरफ़ को चली गई कि साथ की सहेली को यह मालूम न हो कि यहां कोई आदमी बैठा है क्योंकि अभी मुझे इससे बहुतसी बातें करना है।

यह सोचकर एक गुलाब के दरख़्त के नीचे जाकर खड़ी होगई और सहेलीको बुला कर कहने लगी कि देखो सखी इस बाग़ में इस वक़्त कैसे २ फूल खिल रहे हैं और भँवर हर एक कली पर बैठ बैठकर किस मज़े से रस ले रहे हैं और वह गुलाबकी कली कैसी शोभा दे रही है इसी पर भँवर बार २ बैठता है।

॥ दोहा ॥

भँवरा लोभी फूल का, कली २ रस लेय।
कांटा लागै प्रेम का, हेर फेर जिय देय॥
भँवरा अब धीरज धरो, क्यों व्याकुल मनमाहिं।

हितसे रस ले लीजिये, तन मन चाहै जाहिं ॥
श्रीराम चाखो चहौ, सम्हर के बैठो डार।
ये कांटा है प्रेम का, लगत होय हिय पार ॥

हे सखी ! देखं तो इस भँवर को सब्र नहीं है इसी गुलाब कली पर कैसा मोहित होगया है यद्यपि कांटे भी लगते हैं परन्तु यह बाज़ नहीं आता है कैसा बार २ गुञ्जार कर उसी कली पर बैठता है। यह बात चन्द्रमुखी की सुनकर सखी ने कहा।

॥ दोहा ॥

भँवरा मोहित कलीपै, हृदय बसै सोइ नित्त।
जो जाके मन बसिगयो, चढ़त न दूजो चित्त ॥

यह दोहा सखी का सुन कर चन्द्रमुखी कहने लगी, कि हे सखी ! क्या यह भँवरा कली पर आशिक़ है ? यह कह कर दोहा कहा:—

॥ दोहा ॥

क्यों कम्पै क्यों थरहरै, धीरज क्यों न धरे ।
चाखो चाहै प्रेम रस, जोखों क्यों न भरे ॥

चन्द्रमुखी का यह दोहा सुन कर सखी ने कहा, हे प्यारी! तू इस मतलब को नहीं जानती है यह भँवरा गुलाबकी कली पर आशिक़ है इसी से इसी पर गुञ्जार कर रहा है और कोई कली इसको अच्छी नहीं मालूम होती है इसी तरह जब कोई शख़्स किसीपर आशिक़ होजाता है तो फिर उसे सिवाय उस प्राण प्यारे के और कुछ अच्छा नहीं लगता चाहे जान भलेही जाती रहे मगर इस प्रेम के फन्दे से निकलना बड़ा मुशकिल है इसी तरह भँवरा इसी कली पर जान दे रहा है जब तक यह रस न लेलेगा तब तक

बाज़ न आवेगा । सखी यह बात कहकर यह दोहा कहने लगी:—

॥ दोहा ॥

भँवरा ये दिन कठिन हैं, दुख सुख सहो शरीर ।
जबलग फूले केतकी, तबलग बिलम करीर ॥

हे चन्द्रमुखी ! इश्क़ का फन्दा बुरा है तू इन बातों में अगर पड़ जायगी तो नाहक़ में दिलको हाथों से खो बैठेगी इससे इन बातों में क्या धरा है चलो महलको चलें कल फिर सैर करने को आवैंगी तू मेरा कहना मान इन बातों को कुछ ख़याल पर न लाना चाहिये ।

॥ दोहा ॥

श्रीराम कहुँ काहुँ के, जाय लगें नहिं नैन ।
निशिदिनब्याकुलरहतसो, छिनपलपड़ैनचैन॥

यह दोहा कह कर सखी फिर चन्द्रमुखी से कहने लगी, कि हे राजकुमारी ! अगर ऐसी बातें करोगी तो तुम भी भँवरा की तरह फँस जाओगी, ईश्वर न करै कोई किसी के इश्क़ में फँसे इश्क़ की बीमारी बुरी होती है ।

॥ शैर ॥

तड़फ कर मर गई बुलबुल क़फ़स में ।
कोई बन्दा न हो बन्दे के बस में ॥

इश्क़ में पड़ कर निकलना तलवार की धार पर चलना है हे चन्द्रमुखी ! इस से तू मेरा कहना मान ।

॥ शैर ॥

कहा अब मानले मेरा बाज़आ ऐसी बातों से ।
नाहक़मेंदिल तू अपने को गमा बैठेगी हाथोंसे ॥

सखी ने चन्द्रमुखी को हरचन्द समझाया मगर उसकी समझ में एक भी न आया चन्द्र-मुखी तो अविनाशचन्द्र के इश्क़ में फँसही चुकी थी उसकी समझ में कैसे आ सके चन्द्र-मुखी ने कहा, कि हे सखी! इस वक़्त मुझे प्यास लगी है सो तू तालाब से पानी लाकर मुझे पिला दे फिर मैं महल को चलूँगी इतनी बात चन्द्रमुखी की सुनकर सखी तो तालाब से पानी लेने को चली गई और चन्द्रमुखी चट उसी चमेली के दरख़्त के पास जाकर खड़ी होगई जहां अविनाशचन्द्र बैठा था और कहने लगीः—

॥ दोहा ॥

काह तुम्हारो नाम है, कहां करो विश्राम।
श्रीराम कहँ जाहुगे, कहि दीजे निज काम॥

॥ शैर ॥

कहो अहवाल तुम अपना हुवा क्योंकर आना ।
बलामें फँसगये आकर नहीं मुमकिनहै जाना ॥

इतनी बात चन्द्रमुखी की सुन कर अवि-
नाशचन्द्र घबड़ागया कि न जाने यह क्या करै
बग़ैर जाने समझे इसके बाग़ में हमलोग
आगये हैं । इसकी बात का जवाब अगर
नहीं देताहूँ तो बेवक़ूफ़ समझैगी यह बिचार
कर कहा ।

॥ दोहा ॥

याहि नगरमें बसत हम, यहीं हमारो धाम ।
श्रीराम आये यहां, करने तुम्हें सलाम ॥

॥ शैर ॥

बताया हाल अपना मैंने तुमको ।

बताओ तुम पता अब अपना हमको ॥

मेरा नाम तो अविनाशचन्द्र है और इसी शहर में रहता हूं इतर वग़ैरः की दूकान करताहूं आपके बाग़ में सिर्फ़ सैरके लिये आया यह सुन चन्द्रमुखी ने यह दोहा कहा।

॥ दोहा ॥

देखत तुम्हरे रूप को, मोह गई मैं आज।
अबतो छाती से लगो, पूरे हों सब काज ॥

॥ शैर ॥

तुम्हाराइश्क़अब प्यारे बहुत हमको सताताहै।
गलेसेउठके अबलगजा नहीं दिलचैनपाता है॥

चन्द्रमुखी कहने लगी, कि मैं तेरा रूप देखतेही मोहित होगई हूँ अब मुझमें इतनी ताक़त नहीं है कि मैं अपने महल तक जा

सकूं सो तुम उठ कर मेरी छाती से लग कर मेरी तबीयत को ख़ुश करो । तेरे इश्क़ में मेरी जान फँस गई दिल हाथों से निकला जाता है मेरा शरीर क़ाबू में नहीं है ।

चन्द्रमुखी की यह बात सुनकर अविनाशचन्द्र कहने लगा कि मैं हर्गिज़ ऐसा न करूंगा मुझे अब जाने दे इस वक़ मैं तुझसे बोलना तक पसन्द नहीं करता हूं तू चाहै कितना कहैगी मगर मैं एक भी न मानूंगा क्योंकि मेरे दोस्त लोग जो इस कामसे बड़ी नफ़रत रखते हैं सो यहीं मौजूद हैं। बग़ैर अपने दोस्तों की राय के मैं खाना तक नहीं खाता हूं फिर तुझसे मुहब्बत करना तो मुश्किल बात है मैं बग़ैर दोस्तों की राय के तुझसे बात न करूंगा तू नाहक़ही मुझे छेड़ती है। इस से तू सीधा रास्ता अपने महल

का ले मैं भी अपने मकान को जाता हूं इश्क़ बहुत बुरा होता है इश्क़ में पड़कर निकलना हँसी खेल नहीं है और मुझको इस बात की क़सम है कि मैं बग़ैर अपने दोस्तों से पूछे कोई काम न करूंगा इश्क़ तो बड़ा भारी काम है।

॥ दोहा ॥

प्रीति रीति अति कठिन है, यामें परै जो आय।
तनमन की सुधि नहिं रहै, रहि२जिय घबराय॥

॥ शैर ॥

इसी उल्फ़तके कूचेमें नफ़ा पीछे ज़रर पहिले।
लगावे आंख जो कोई करे जांका सफ़र पहिले॥

यह सुनकर चन्द्रमुखी कहने लगी कि अगर इस वक़्त तुम मुझसे मिलना नहीं

चाहते हो तो इस बात की क़सम खाओ कि जिस वक़्त तुम मुझे बुलाओगी उसी वक़्त हम तुम्हारे पास हाज़िर होंगे। चन्द्रमुखी की यह बात सुनकर अविनाशचन्द्र ने कहा, कि जिस वक़्त तुम मुझे बुलाओगी और मेरे दोस्तों की राय होगी तो मैं फ़ौरन् तेरे पास आऊंगा।

इतनी बात चीत होने पाईथी कि सहेली तालाब से पानी लाकर आई चन्द्रमुखी उसे देख कर इधर उधर टहलने लगी सखी ने आकर पानी दिया चन्द्रमुखी पानी पीकर सखी के साथ अपने महल को चली गई। इधर यह चारों यार बाग़से अपने मकानको चले आये मकानपर पहुंच कर अविनाशचन्द्र ने चन्द्रमुखी का सारा हाल दोस्तों से कह सुनाया।

चन्द्रमुखी बिरह की मारी हुई ज्यों त्यों कर महल तक पहुँची और जाकर रोगी की तरह पड़ रही खाना पीना सब भूला हुआ था इश्क़ की आग बदन में सुलग रही थी पलँग पर इधर उधर करवट लेती थी मगर किसी तरह चैन न था उस दिनकी रात गोया सालके बराबर कटरही थी घड़ी का कांटा फिरता नहीं था चन्द्रमा की चांदनी चित्त को चौगुना चञ्चल कर रही थी।

तमाम रात तारे गिनते हुए ही गुज़रगई ज्यों त्यों कर सुबह हुई साथ की सहेलियों ने आकर चन्द्रमुखी को उठाया और देखा कि आज चन्द्रमुखी का तन छीन मुख मलीन चेहरा मुरझाया हुआ है रोज़ की तरह आज खुश मिज़ाज नहीं है अच्छी तरह से बोलना भूली हुई है किसी की बात का जवाब देना

तो आज के दिन जानती ही नहीं जो सखी चन्द्रमुखी के साथ कल बाग़ में गई थी उसी ने पास आकर पूछा, प्यारी चन्द्रमुखी आज तेरी यह क्या दशा है किसकी फ़िक्र में दिल मुब्तिला है जिससे तेरा यह चन्द्रमुख मैला हो रहा है आंखों में इश्क़ कैसा नया भरा हुआ मालूम होता है तेरा बोल खुशीके साथ निकलने से रुकता है इससे ज़ाहिर है कि तेरे दिल पर कोई सख़्त सदमा पहुँचा है तुझे मेरी क़सम है तू अपना सच्चा हाल मुझ से बतादे, क्या तू रातको किसी ख़्वाब में पड़ कर डर गई है या तबीयत कहीं जाकर फँस गई है सो अपना पूरा २ हाल मुझसे कहदे।

चन्द्रमुखी एक ठंढी श्वास लेकर कहने लगी, हे सखी! बात कहने की नहीं है मगर बग़ैर कहे दिल मानताही नहीं। अपना हाल

तुझसे क्या कहूँ कहने में शरम आती है कल की बात है मैं तुझे साथ लेकर बाग़ में गई थी वहां एक पुरुष नौजवान अतिस्वरूपवान् किसी राजकुमारं के समान बाग़ में बैठा नज़र आया, जिस वक़्त मैंने तुझे पानी लेने को तालाब पर भेजाथा उस वक़्त उसे बुलाया और कुछ थोड़ी सी बात चीत भी उससे की थी तेरे आजाने पर वह चला गया फिर मैं तुझे साथ लेकर अपने महल को चली आई हे सखी! मैंने जब से उसे देखा है दिलको क़रारी नहीं है अगर वह मुझे नहीं मिलेगा तो न जाने यह दिल क्या करेगा।

॥ दोहा ॥

सूरत मेरे चित्त में, वाकी गई समाय।
धीरज कहु कैसे धरूं, जबलग मिलै न आय॥

। शैर ॥

बसा जिस वक़्त से दिलमें न हरगिज़ चैन आती है ।
नहीं उस बिन मेरा जीना सनम् बिनजानजातीहै ॥

सो हे सखी ! ऐसी हालत मेरी होरही है क्याकरूं ? यह बात चन्द्रमुखी की सुन कर सखी ने कहा, हे प्रिये ! मैंने तो कल तुझको हरचन्द समझाया मगर तेरे दिल में एक भी न आई अब तेरी भँवरा गुलाब की सी दशा होगई अगर कुछ पता जानती हो तो मुझे बतादे मैं अभी जाकर उसे लाऊंगी ।

॥ दोहा ॥

समझायो समझी नहीं, प्रीति करी तुम धाय ।
अब काहे व्याकुलभई, धीर धरो मनमाँय ॥

॥ शैर ॥

सब्रकर दिलमें ऐ प्यारी अभी उससे मिलातीहूँ।
पताउसकाबतामुझको मैं उसके पासजातीहूं ॥

॥ कवित्त ॥

मैंने समझायो चन्द्रमुखी तोहिं बारबार,
तू तो मेरी बात चित्त एकहु न लाई है।
भौंरा औ गुलाबकली कैसी दशा तेरी भई,
नाहक़ में तूने जान अपनी फँसाई है॥
पहिले न बिचार कियो एतो मनमांहिं एरी,
पाछे अब काहे प्यारी ऐसी अकुलाई है।
धीरज हिये में धार पूरों सब तेरी आश,
श्रीराम प्रीति होत अन्तं दुखदाई है॥

यह बात सखी की सुनकर चन्द्रमुखी कहने लगी कि ऐ सखी! मैंने तो तुझसे छिपा

कर यह इश्क़ का सौदा मोल लिया था मगर लाचार होकर तुझसे कहनाही पड़ा।

सखी कहने लगी, कि मैं फिर भी तुझसे कहती हूँ कि तू इश्क़में न फँस यह बीमारी बुरी होती है। यह सुनकर चन्द्रमुखी कहने लगी, कि तेरा कहना ठीक है मगर मेरा दिल तो मानताही नहीं है।

॥ दोहा ॥

रूप मनोहर देखिकै, मोहिजात नहिं कौन।
श्रीराम दुख सबन को, परे इश्क़ में जौन॥

॥ शैर ॥

कौनसा दिलहै कि जिसे इश्क़का आज़ार नहीं।
अच्छी सूरतका भला कौन तलबगार नहीं॥

सो हे सखी! मैं तुझे एक ख़त लिखे

देतीहूँ सो ले जाकर उसे देना जो कुछ वह जवाब दे सो मेरे पास लाना यह भेद और किसी को न मालूम होने पावे।

प्राणप्यारे आंखों के तारे!

जिस वक़्त से मैंने तुमको उस बाग़ में देखा है तबसे दिलको बेचैनी है—

चलते वक़्त आपने क़सम खाई थी कि जिस वक़्त आप बुलावेंगी उस वक़्त मैं ज़रूर तुम्हारे पास आऊँगा, सो आज यह ख़त आपकी ख़िदमत में भेज कर अर्ज़ करती हूँ कि इस ख़त के पाते ही तशरीफ़ लाइये, आपके बिना मेरी ज़िन्दगी दुशवार हो रही है। आप के देखने के लिये तबीयत बहुत घबड़ा रही है। मझे उम्मेद है कि आप देर न करेंगे।

॥ दोहा ॥

प्यारे तुम्हरे दरश बिन, ब्याकुल हैं ये नैन ।
नैनासे नैना मिलैं, तभी होय जिय चैन ॥
काह करों कासे कहों, अपने जियको हाल ।
श्रीराम अब आयके, देखि लेहु तत्काल ॥

॥ सवैया ॥

जादिन ते तुम मोहिं मिले, अरु प्रेम की डोर हिये महँ डारी । चैन परै दिन रैन नहीं, दिलमांहि भईहै महा बेकरारी ॥ निज दर्श सुधारस प्याइये जू, न तो जान चहै यह जान हमारी । श्रीरामजू धीरज कैसे धरों, अब देखे बिना वह शक्ल तुम्हारी ॥

॥ शैर ॥

कहां तक हाल इस ग़म का लिखूं मैं ।

तेरे सीने से प्यारे कब लगूं मैं ॥
यही है आरज़ू इमदाद मेरी।
शक्ल किस वक़्त फिर देखूंगी तेरी ॥
नहीं अब नींद तुम बिन मुझको आती।
निशा कारी सनम मोको डराती ॥
न खाना मुझको अब तुम बिन सुहाता।
मरूं विष खाय यही दिल में आता ॥
मेरी तुम पीर क्यों हरते नहीं हो।
सनम अब दीद क्यों देते नहीं हो ॥
बिरह की पीर तब मेरी बुझेगी।
तेरी छाती से छाती जब लगेगी ॥
नहीं मालूम था ये हाल मुझको।
न देती दिल कभी मैं प्यारे तुझको ॥
मुहब्बत अब किसी से न करूंगी।
ज़हर खा तेरे ऊपर मैं मरूंगी ॥
करो श्रीराम आकर मेहरबानी।

हुई हूं इश्क़ में तेरे दिवानी॥

अब ज़्यादह क्या लिखूं आप के इश्क़ में मेरी जो हालत होरही है वह मेरे पास आने से ही आप मालूम कर सके हैं।

॥ दोहा ॥

लिखन पढ़न की है नहीं, कही सुनी नहिं जात।
अपने जिय ते जानिये, मेरे मन की बात॥

॥ सवैया ॥

आंखें मेरी तव देखनको, हरवक़्त निहारत राह तुम्हारी। आवन को इक़रार कियो, फिरि क्यों इतने दिन दीन्ह गुज़ारी॥ दर्श तुम्हारे मिले न हमैं, कवि गंगप्रसाद कहैं ये विचारी। पत्र सँदेश न भेजो कछू, तेहि कारन दिल को भई बेक़रारी॥

॥ दोहा ॥

राम करै कहुँ ना लगैं, निर्मोही सों नैन।
प्राण जाहिं चहुँ तलफि के, रंच दया व करै न॥

सो हे प्यारे! इस ख़त का जवाब इसी सखी को देदेना और आने का पूरा पूरा वादा लिखना।

आपकी प्यारी,
चन्द्रमुखी वही बाग़वाली.

॥ शैर ॥

ये सारा हाल लिख चन्द्रमुखीं ने।
लिफ़ाफ़ा बन्दकर लीन्हा सखी ने॥
कहैं श्रीराम ख़त लिखकर भेजाया।
किसीने भेद कुछ उसका न पाया॥

सखी ने ख़त लेकर छिपा लिया और

अविनाशचन्द्र के पास दूकान के पते से ले चली, चन्द्रमुखी ने सखी से कहा इस ख़त को उसी के हाथ में देना अगर धोखे से भी और किसी को दे आवेगी तो मेरी तेरी ख़ैरियत नहीं है।

चन्द्रमुखी की यह बात सुन सखी वहां से चल कर चन्द्रमुखी के बताये हुए पते से अविनाशचन्द्र की दूकान पर आगई और कहने लगी, मैंने आप की दूकान की बड़ी तारीफ़ सुनी है सो मुझे कुछ सामान इतर वग़ैरह आपके यहां से लेना है अविनाशचन्द्र ने कहा, किसने मँगाया है उसने कहा राजकुमारी के लिये लेने को आई हूं।

अविनाशचन्द्र ने पूछा कितने का और कौन २ सा इतर मँगाया है सखी ने ख़त निकाल कर देदिया और कहा जो कुछ इस

ख़त में लिखा है मैं उसी की ख़रीदार हूँ उस ने लिफ़ाफ़ा हाथ में ले खोलकर पढ़ा तो इतर क्या इतरवाले की ख़रीदारी थी पढ़कर हैरत में होगया।

विचार करने लगा, क्या करूं मुझे जाना तो किसी हालत में लाज़िम नहीं है मगर जवाब न देना बेवकूफ़ी में दाख़िल है वह राजकुमारी होकर जब ऐसी आधीनता लिखती है तो जवाब मुझे भी ज़रूर देना चाहिये। यह सोच कर जवाब लिख दिया।

प्यारी चन्द्रमुखी !

तुम्हारा मुहब्बत भरा हुआ ख़त लेकर तुम्हारी सखी मेरे पास आई, ख़त पाया छाती से लगाया यही दिल में आया कि इसी वक़्त आऊँ तुम्हारा लिखना सब ठीक है मगरः—

॥ दोहा ॥

प्रीति रीति अति कठिन है, समझ देख मन माहिं।
लागी तब जानी नहीं, अन्त प्राणहूँ जाहिं॥

॥ शैर ॥

ख़्वाब में भी नज़र शक्ल तुम्हारी आई।
कैसे जानूं मैं तुम्हें याद हमारी आई॥

ख़ैर मैं तेरे पास किसी वक़्त आऊंगा मगर मेरे दोस्तों की राय होने पर पूरा वादा करूंगा यह लिखकर उसी स्त्री को दे दिया और दो शीशी इतर बहुत अच्छा देकर कहा कि यह श्रीमती राजकुमारी को देना और मेरा सलाम कहना अविनाशचन्द्र की यह बात सुनकर सखी ख़त लेकर चलीगई और चन्द्रमुखी को जाकर देदिया।

अविनाशचन्द्र भी थोड़ी देर बाद चन्द्र-

मुखी का ख़त लेकर दोस्तों के पास गया और सारा हाल उनलोगों से कहसुनाया । उस ख़त का हाल उन सबों ने सुनकर कहा कि पराई स्त्री से हर्गिज़ मुहब्बत न करना चाहिये इसके बराबर दूसरा कोई पाप नहीं है इन्सान को चाहिये कि हमेशा बुरे कामों से दूर भागे, सो हे मित्र ! उसको तुम्हारी क्या मुहब्बत वह राजकुमारी और तुम दूकान-दार साधारण आदमी । यारी के यही माने हैं कि दोस्तों को बुरे कामों से बचाता रहे और समझदार को चाहिये कि बुरे कामों से हमेशा बचता रहे ।

॥ दोहा ॥

प्रीति न कबहूं कीजिये, पर नारी के साथ ।
जियत दाग़ कुल को लगै, मरे नरक लैजात ॥

पर नारी पैनी छुरी, ताते दूरहि भाज।
लोकलाज जिय जातहै, पर नारी के काज॥

॥ कवित्त ॥

करी प्रीति जाने पर नारी सँग यार सुनो,
सो तो बदनाम होत सकल जहान में।
स्वर्गहूं में ठौर ताको ढूंढ़हू मिलैगो नाहिं,
डारी खाक वाने तब निज कुलकान में॥
नरक में ताड़ना करेंगे यमराज ताकी,
खम्भन में बांधि देह छेदें फिर बान में।
याते सोच देख परनारिन की प्रीति बुरी,
करिये न यार कवौं भूलिके गुमान में॥

अगर तुझको बुलाया है और चन्द्रमुखी तेरे विरह में व्याकुल है तो जाकर उसे समझा आना अगर समझाने से वह मान जायगी तो ठीक है वरना बड़ीभारी बदनामी

और जानका .ख़तरा है । क्योंकि उसने ख़त में लिखा है कि अगर तुम मुझे न मिलोगे तो मेरी ज़िन्दगी दुशंवार है । अगर उसने अपना लिखना सच किया तो बड़ा भारी गुनाह होगा सो तुमको जाना ज़रूरी है मगर उसको बुरी निगाह से नहीं देखना चाहिये ।

इतनी बात दोस्तों की सुनकर अविनाशचन्द्र वहां से चल दिया और अपनी दूकान पर आकर बैठगया चन्द्रमुखी अपने महल में पलँग पर पड़ी करवट बदल रही थी अविनाशचन्द्र के इश्क़ में बे चैन थी अब आता होगा इस उम्मेदपर पलक तक न लगती थी जब याद आता था चौंक कर उठ बैठती थी ।

॥ दोहा ॥

क्षण बैठे क्षण उठिचलै, क्षण क्षण ठाढ़ी होय ।

घायल सी घूमत फिरै, मर्म न जानै कोय ॥

॥ शैर ॥

करवटें लेते पलँगपर शब गुज़रने अब लगी ।
चैन प्यारे बिन नहीं है आंख जिस दिनसे लगी ॥

बस इसी सोच बिचार में वह भी रात बीत गई सुबह होते ही चन्द्रमुखी ने फिर सखी को बुलाया और कहा कि देख बेरहम आज अभी तक नहीं आया मालूम होता है कि मैंही उसे चाहती हूँ वह मुझे बिलकुल नहीं चाहता अगर उसे कुछ मेरी मुहब्बत होती तो ज़रूर आता सच कहा है कि एक हाथ से ताली नहीं बजती ।

॥ दोहा ॥

शर्म्मा प्रीति सराहिये, करी कनौजी राय ।
ऊदल के सँग में गये, प्राण गमाये जाय ॥

धन्य हैं वे पुरुष जो दोस्ती के बन्धन में पड़ कर दोस्ती का हक़ अदा करते हैं दोस्त वही है जो नेक सलाह देकर दोस्त को बुरे कामों से बचावै। अविनाशचन्द्र तो इसी सोच में पड़ा था कि दोस्तों की राय इस काम के करने की नहीं है इसलिये अगरं मुझे वह भूल जाय तो बिलकुलं न जानाही ठीक है हालांकि दोस्तों की राय यह सिर्फ़ जाने में ही कुछ बुराई नहीं है मगर मैं गया और कुछ बुराई होगई तो दोस्तों से दोस्ती में फ़र्क़ पड़जायगा। औरत की दोस्ती ही क्या इससे जब फिर से बुलावैगी तब जाऊँगा और अगर भूलगई तो बहुत अच्छाहुआ।

इधर अविनाशचन्द्र तो रात भर इसी बिचार में पड़ा रहा उधर ज्यों त्यों कर चन्द्र-मुखी की रात गुज़रगई सुबह होतेही चन्द्रमुखी

ने फिर एक ख़त लिखकर सखी को दिया।

प्राण प्यारे! आप का ख़त कल मिला था उसको पढ़कर दिल बाग़ २ हुआ था कल दिन भर और रात भर आप के इन्तिज़ार में बेचैन रही नींद तक न आई मगर आपके आने की कुछ उम्मेद न पाई आज फिर आप को लिखती हूं कि अगर नहीं आना है तो साफ़ इन्कार कीजिये मैं इस इश्क़ के फन्दे से छटने का दूसरा कोई बन्दोबस्त करूं।

॥ दोहा ॥

सोच कियो मन में नहीं, तुमसे कीन्हीं प्रीत।
अब यह कैसी करतहो, कहि दीजै मम मीत॥
हम जानी तुम करहुगे, प्यारे हम सन प्रीति।
श्रीराम उलटी भई, नई प्रीति की रीति॥
प्यारे तुम्हरे मिलन को, व्याकुल रहत शरीर।

श्रीराम अब आय के, हरि लीजै सब पीर ॥
प्यारे तुम्हरे मिलन की, लागी मन में आस ।
जैसे चातक स्वाति बिन, रटत पियास पियास ॥

हे प्यारे ! आज यह आख़िरी ख़त आप की ख़िदमत में भेजकर अर्ज़ करती हूं कि आप अगर आज न आकर कल आये भी तो मैं ज़िन्दा न मिलूंगी इसलिये आपको लाज़िम है कि कुछ भी मुहब्बत उस दिन की मुलाक़ात से होगई हो तो जल्द आकर इश्क़ दरिया से मुझ डूबती हुई को निकालो ।

॥ दोहा ॥

तलफौं अतिब्याकुलपड़ी, बिरंहालियोतनलूटि।
का करिहौ फिरि आयकै, जब तन जैहै छूटि॥

॥ शैर ॥

इश्क़ के जाल में ये जा फँसी है ।

मगर सूरत तेरी हिरदे बसी है ॥

चन्द्रमुखी ने यह सब हाल लिखकर सखी के हाथ अविनाशचन्द्र के पास भेज दिया और चलते वक़्त सखी को समझा दिया अगर वह आवे तो महल के पिछले दरवाज़े से लाना किसीको यह बात मालूम न होने पावे ।

सखी ख़त को लेकर चली गई और दूकान पर जाकर अविनाशचन्द्र को वह ख़त देदिया, अविनाशचन्द्र उस ख़त को पढ़ते ही हैरत में होगया कि अगर आज न गया तो बेशक चन्द्रमुखी अपनी जान को कुछ कर बैठेगी इससे जो होगा सो होगा ज़रा देर के लिये उसके पास हो आना चाहिये । यह विचार कर कपड़े पहन लिये और सखी के साथ चलदिया ।

सखी ने चन्द्रमुखी से आकर कहा अवि-
नाशचन्द्र को मैं ले आई, इस बात को सुनते
ही चन्द्रमुखी खुशी के मारे बाग़ बाग़ होगई
सखी ने कह कर अन्दर बुलाया वह आकर
कुरसी पर बैठ गया सखी ने इलायची पान
से आदर सत्कार किया।

अविनाशचन्द्र कहने लगा, कि आपने
मुझे क्यों याद किया है मेरा क्या क़ुसूर है
मैंने आपको उस दिन हरचन्द समझाया था
कि तू इन बातों में पड़कर हैरान व परेशान
और बहुत बदनाम होगी इससे इन बातों का
ज़िक्र छोड़ इश्क़ से मुँह मोड़, मगर तुमने
एक भी न मानी अब इतनी कर मेहरबानी कि
इश्क़ में न बन दीवानी क्योंकि मुझे तुझे उ-
ठानी पड़ेगी बड़ी भारी परेशानी।

मैं पराई स्त्री से मुहब्बत करना बड़ाभारी

पाप समझता हूँ, हे चन्द्रमुखी! दूसरे की औरत से जो मुहब्बत बढ़ाते हैं वह अपना यह लोक और परलोक दोनों बिगाड़ते हैं तुझे तो इस वक्त कुछ दिखलाई नहीं देता है इस सबब से ऐसी बातें करती है। तुझसे मुहब्बत करके जब मेरी नरक में ताड़ना होगी और ईश्वर के यहां इस गुनाह की सज़ा मिलेगी उस वक्त तेरी यह मुहब्बत से भरीहुई बातें और खूबसूरती मेरे किसी काम में नहीं आवेगी। तेरी यह बातें मेरी कुछ भी मदद न कर सकेंगी, इसी सबब से मैं तेरे पास आना मुनासिब नहीं समझता था तुमने नहीं माना इसलिये मैं तुमको समझाने के लिये यहां आया हूँ।

अविनाशचन्द्र की दो टूक बातें सुनतेही उस नवयौवना चन्द्रमुखी के आंखों में आंसू

आगये थोड़ीदेर के बाद हिचक कर बोली प्यारे ! बस इतनाही कहा था कि बिरहबिथा ने आकर कण्ठ रोक दिया मनमें सोचा था कि कई दिन की बात जो पेटमें भरी हुई हैं वह सब आज कहकर दिलका अरमान पूरा करूंगी मगर फिर कुछ भी न कह सकी। बड़ी देर तक दोनों बैठे रहे अविनाशचन्द्र ने कहा अब मैं जाताहूं अगर तुझे कुछ कहना हो तो कहती क्यों नहीं ? चन्द्रमुखी बोली मैंने तुझको ऐसा बेरहम न समझा था इस ग़रज़से बुलाया था कि तुम मेरी बिरहाग्नि को ठण्ढा करोगे कई बातें कहने को थी मगर इस वक़्त सब भूल गई हूँ।

॥ दोहा ॥

प्यारे तुम्हरे कारने, बिकल रहौं दिन रैन।

सो अब हिरदे से लगो, हे प्यारे सुख दैन ॥

अविनाशचन्द्र ने कहा, हे चन्द्रमुखी! मैंने तो तुझसे उसी दिन कह दिया था कि पराई स्त्री से मुहब्बत करना मैं पसन्द नहीं करता हूं क्योंकि स्त्री का विश्वास कभी न करना चाहिये, स्त्री अपने मतलब के लिये मीठी २ बातों से इंसान को क़ाबू में कर लेती है फिर मतलब निकल जाने पर औरत की बराबर बेरहमी और किसीमें नहीं है। अगर किसी मर्द को औरत से काम पड़े तो औरत के बराबर सङ्गदिल कोई नहीं, चाहै मर्द की जान क्यों न जाती रहे मगर उसको कुछ परवाह नहीं, इन्हीं बातों से मेरा दिल औरतों की तरफ़ से हट गया है मुझे औरत की सूरत से भी नफ़रत है चन्द्रमुखी कहने लगी कि यह तुम क्या बकते हो मर्द की बराबर

बेरहम और सङ्गदिल दूसरा नहीं है जिसकी मिसाल आप खुदही मौजूद हैं ज़्यादह कहने की ज़रूरत नहीं।

अविनाशचन्द्र बोला चन्द्रमुखी तूने अभी तक औरतों की बेवफ़ाई और सङ्गदिली की बातें नहीं सुनी हैं।

चन्द्रमुखी बोली मेरा जहांतक ख़याल है मर्द की बराबर सङ्गदिली औरतों में नहीं है अविनाशचन्द्र कहनेलगा अगर तुझको यक़ीन नहीं आता है तो मैं तुझे एक पुराना हाल औरत की बेरहमी और सङ्गदिली का सुनाता हूं सो कान लगाकर सुनले फिर जो कुछ तू कहेगी वह मैं करूंगा।

॥ पहली कहानी ॥

अविनाशचन्द्र कहनेलगा, कि हे चन्द्रमुखी!

पूर्व की ओर एक बड़ाभारी शहर रतनपुर था, वहां का राजा बड़ा परोपकारी और न्यायकारी रहमदिल जिसका राज बहुत दूर तक था, एक दिन वह अपने बाग़में बड़े अफ़सोस में बैठा हुआ था।

दैवात एक फ़कीर ने आकर राजा से पूछा कि आप ऐसी किस फ़िक्र में बैठे हैं कि चेहरा मुरझाया रौनक़ जाती रही है सो मुझसे अफ़सोस की बात बतलाइये, राजाने कहा बाबा मुझे ईश्वर ने ही फ़िक्र में डाल रक्खा है इतनी उम्र होगई अभीतक मैंने औलाद का मुँह नहीं देखा इसी फ़िक्र में रात दिन जान फँसी रहती है कि यह सब राज पाट आगे को किसका होगा।

फ़क़ीर ने राजा की बात सुनकर कहा हे राजा! मेरी बात का यक़ीन कर तेरे एक लड़का

इसी साल के अन्दर बड़ा खूबसूरत और भाग्यवान् पैदा होगा मगर यह बात मेरी याद रखना कि बारह वर्षतक उसको कहीं बाहर घूमने को न जाने देना अगर तू यह बात भूल जायगा तो बहुत पछतायगा।

सो हे प्यारी चन्द्रमुखी ! फ़क़ीर की बात सुनकर राजा खुशी से फूला नहीं समाता था उठकर फ़क़ीरके पैरों पर गिरपड़ा और कहा आप यहां से कहीं न जायँ मैं दिल-जान से आपकी ख़िदमत करूंगा आप यहीं धूनी रमाकर मेरे राज्य की शोभा बढ़ावें। फ़क़ीर ने कहा, हे राजा ! मेरा यह काम नहीं कि मैं जगह २ धूनी रमाता रहूँ मैं हमेशा जङ्गलों में रहा करता हूं मगर तुझे दुःखी देखकर आज तेरे पास आया हूं यह कहकर फ़क़ीर तो चला गया, और राजा वहां से उठकर

रनिवास में गया और यह सब हाल रानी से जाकर कहा, इस बात को सुनकर रानी भी बड़ी खुशी हुई, इसी तरह समय पूरा होने पर राजा के एक पुत्र जैसा फ़क़ीर ने कहा था पैदा हुआ तमाम राज्य में मङ्गल छागया जगह २ खुशी होने लगी भूखों को खाना और नंगों को वस्त्र बटने लगा इसीतरह रोज़-मर्रह खुशी के नाच रङ्ग होते थे ।

जब वह लड़का बड़ा हुआ राजा ने ऐसा बन्दोबस्त कर दिया कि वह कहीं बाहर न निकलने पावे और सिर्फ़ दीवान का लड़का बीरसिंह जो कि राजकुमारही की उम्र का था वही राजकुमार के साथ खेला करता था निदान जब वह बारह वर्ष का होगया तो एक दिन उसके दिल में आया कि महल के अन्दर पड़े २ बारह वर्ष गुज़र गईं मगर

आज तक मैंने कहीं बाहर की सैर नहीं की मैं नहीं जानता कि इस दुनिया में कौन कौनसी चीज़ क़ाबिल देखने व सुनने के हैं बड़े अफ़सोस के साथ राजकुमार ने वीरसिंह से कहा दोस्त! मुझे बारह वर्ष इसी महल के अन्दर बीत गईं मगर आज तक बाहर की सूरत तक नहीं देखी सो आज दिल में आता है कि हम तुम दोनों जङ्गल की हवा खाने चलें। वीरसिंह इस बात को सुन कर बड़ा ही प्रसन्न हुआ और हँस कर कहा बहुत अच्छा चलिये मगर अपने पिता से इजाज़त मांग लीजिये, राजकुमार ने एक चिट्ठी भेजकर राजा से इजाज़त मांगली उस वक़्त राजकुमार की चिट्ठी को पढ़कर फ़क़ीर की बात का कुछ ख़याल राजा को न रहा॥

होनहार होकर ही रहती है ख़याल

क्योंकर रहता राजा की इजाज़त पाकर राजकुमार ने बीरसिंह से कहा हे मित्र ! अब तो जल्द जङ्गल को चलना चाहिये क्योंकि सुबह के वक़्त जङ्गल, मैदान की हवा बहुत प्यारी और फ़ायदेमन्द होती है बीरसिंह ने कहा हे राजकुमार ! मैंने सुना है कि एक फ़क़ीर ने आप के पिता से कहदिया था कि बारह वर्षतक राजकुमार को कहीं बाहर न जाने देना अगर ऐसा करेगा तो पछतायगा, सो आप अभी कुछ दिन तक कहीं बाहर न जावें। शायद आप के पिता को इस बात का कुछ ख़याल न रहा हो इसी धोखे से जाने की इजाज़त देदी होगी । राजकुमार बोला मैं तेरी बात को न मानूंगा क्योंकि कई दिनों से मेरी तबीयत बाहर जाने के लिये घबड़ा रही है हम तुम दोनों जङ्गल की हवा खाने

को चलते हैं और बहुत जल्द घर का वापिस आवेंगे, वीरसिंह कहने लगा मित्र ! यों चलना ठीक नहीं है कुछ थोड़ेसे सवारों को साथ में लेकर शिकार की तैयारी कर जङ्गल को जाना बेहतर होगा बग़ैर हथियारों के जङ्गल को हरगिज़ न जाना चाहिये। वीरसिंह ने सोचा कि ऐसा न हो किसी शेर सिंह आदि जङ्गली जानवर से सामना होजाय तो बेकार जान जाय।

निदान वीरसिंह ने राजकुमार को हरचन्द समझाया मगर उसके दिल में एक न आया, और राजकुमार ने वीरसिंह से कहा कि आप मेहरबानी करके दो घोड़े बहुत तेज़ मेरे पिता के अस्तबल से मँगवाइये और जो हथियार शिकार के लिये आप को चाहिये वह भी मँगवा लीजिये सिर्फ़ हम और

तुम दोही आदमी चलेंगे सवारों की कोई ज़रूरत नहीं है। बीरसिंह ने यह बात सुन कर दो घोड़े ख़ास राजा की सवारी के मँगवाये, राजकुमार और बीरसिंह दोनों घोड़ों पर सवार हो शिकार के लिये जङ्गल को चलदिये चलते २ बहुत दूर निकल गये अचानक एक हिरन राजकुमार के सामने से निकला राजकुमार ने हिरन के पीछे घोड़ा भगाया, बीरसिंह भी उसके पीछे २ चला जाता था हिरन पहाड़ के ऊपर चढ़गया बीरसिंह ने कहा चलो अब घर को वापिस चलें हिरन का हाथ आना दुशवार है राजकुमार बोला जबतक इस हिरन को मार न लूंगा हरगिज़ पीछे को क़दम न रक्खूंगा क्योंकि मेरी शिकार का यह पहिला दिन है अगर आज शिकार हाथ से निकल गई तो

उम्र भर तक शिकार हाथ आना मुश्किल है तुम यहीं बैठो मैं अभी हिरन को मार कर वापिस आता हूं वीरसिंह से यह कहकर राजकुमार भी पहाड़ के ऊपर चढ़गया, वहां जाकर हिरन एक दरख़्त की छाया में खड़ा हुआ देखा, परन्तु यह हिरन राजकुमार को देखकर एक गुफ़ा में घुसगया, राजकुमार ने हिरन को गुफ़ा में घुसते देख घोड़े को छोड़ा और हाथ में बन्दूक़ लेकर उसके पीछे चला गुफ़ा के अन्दर ऐसा अन्धकार था कि अपनाही बदन दिखाई नहीं देता था, हिरन न जाने कितनी दूर किधर निकल गया, राजकुमार की तबीयत उस गुफ़ा के भीतर अँधेरे में घबड़ाने लगी लेकिन आगे बढ़कर कुछ कुछ उजेला दिखलाई देने लगा और अचानक राजकुमार की निगाह ऊपर की

तरफ़ गई तो देखता क्या है एक पत्थर पर यह लिखा हुआ है कि "इस तरफ़ भूल कर भी न जाना चाहिये" इसको पढ़कर राजकुमार वहीं खड़ा होगया, और घबराया सा इधर उधर देखने लगा, तो दाहिनी तरफ़ एक पत्थर की चट्टान पर कुछ लिखा हुआ मालूम हुआ मगर पढ़ने में नहीं आता था, यह हाल देखकर राजकुमार ने अपनी जेब से एक रूमाल निकाल उन अक्षरों को साफ़ करने का इरादा किया परन्तु ज्योंही राजकुमार ने उस पत्थर पर हाथ रक्खा तो एकदम ही वह पत्थर की चट्टान नीचे को चलीगई और बहुत ही खूब सूरत नौजवान दो स्त्रियों ने इधर उधर से आकर राजकुमार का हाथ पकड़ लिया और राजकुमारको उस खोहके अन्दर लिवा लेगईं, राजकुमार ने वहां

जाकर देखा कि एक बहुत ख़ूबसूरत संगमरमर की बारहदरी बनी है जिस की सजावट ने राजकुमार का मन मोहित कर लिया। उसी बारहदरी के बीच में रत्न जटित सिंहासन बिछा हुआ है उस पर अत्यन्तही स्वरूपवान् एक राजकुमारी बैठी है जिसके कमल समान दोनों नेत्र मनको मोहित किये लेते थे, राजकुमार उसको देखतेही मूर्च्छित होकर ज़मीन पर गिर पड़ा॥

इतनी बात अविनाशचन्द्र ने चन्द्रमुखी को सुनपाई थी कि कान में घंटे की आवाज़ आई, लेम्प की रोशनी फीकी मालूम होने लगी। अविनाशचन्द्रने कहा कि हे चन्द्रमुखी! अब सवेरा होगया इस से मैं जाता हूँ अब अगर राजकुमार और उस सुन्दरी की मुहब्बत का हाल तुझ से कहूंगा तो कई दिन

गुज़र जायँगे क्योंकि आगे का हाल ऐसा मुहब्बत से भरा हुआ है कि जिसके सुनते ही खाना पानी भूलजाता है बग़ैर पूरा हाल सुने हुए दिल छोड़ने को नहीं चाहता, सो यह हाल कल की रात को मैं तुझे सुनाऊंगा, इतना कहकर अविनाशचन्द्र तो अपने मकान को चला गया और चन्द्रमुखी निराश हो पड़रही।

अब आज रात का हाल जो अविनाशचन्द्र चन्द्रमुखी को सुनावेगा सो इस पुस्तक के दूसरे भाग में लिखा गया है आशा है कि आप लोग इस प्रथम भाग को पढ़कर खुश होंगे।

इति क़िस्सा साढ़ेतीनयार का प्रथमभाग समाप्त।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ क़िस्सा-साढ़ेतीनयार का ॥

दूसरा भाग

वाचक वृन्द ! आइये, हम आपको फिर चन्द्रमुखी के पास लिये चलते हैं, कि जो अविनाशचन्द्र के प्रेम में ग़ोते खारही है, जिसको फूलसरीखी शय्या भी कांटे के समान होरही है, पासही उसके एक सखी खड़ीहुई है ॥

चन्द्रमुखी-सखी की ओर देखकर बोली कि-यदि प्यारे अविनाशचन्द्र ने मुझे अपनी दासी न बनाया तो अवश्यही यह पापी प्राण इस संसार सागर से पयानं करेगा इतना

कहते २ कण्ठ रुक गया और आँखों से अ-
श्रुपात होने लगा, सखी राजकुमारी की यह
दशा देखकर अति घबड़ाई परन्तु चित्त को
सँभाल कर बोली कि-प्यारी! कोई चिन्ता
की बात नहीं है, वह आपको अवश्य ही
ग्रहण करेंगे, मुझे पूर्ण आशा है, क्योंकि-वह
चलती बार यह कह गये थे कि-यह वार्ता
फिर किसी दिन आपको सुनाऊंगा अब
इसी बात से मिलने की आशा प्रकट होती है
सखी के इतना कहने पर राजकुमारी उठी
और दूसरे कमरे की ओर पधारी कि-जहां
पर लिखने पढ़ने का सामान एक मेज़ पर बा
क़ायदे रक्खा हुआ था और कई एक कुर्सियां
पड़ी हुई थीं वहांपर जाकर बैठगई और सखी
को बुलाकर बोली कि-देख सखी! मैं तुझे यह
पत्र प्यारे अविनाशचन्द्र के पास ले जाने

को देती हूँ सो यह पत्र उन्हीं को देना और दूसरे को मत देना पत्र को लिख कर सखी के हवाले किया परिचारिका पत्र पातेही बहुत शीघ्र खिड़की की राह से तुरन्त फुलवाड़ी में गई वहां से बायें तरफ़ के चमन में होकर झट बाग़ के चोर दरवाज़े पर पहुँची फ़ौरन दीवार की उठी हुई कील को दबाया दबाते ही तख़्ता नीचे को हटा और एक दरवाज़ा निकल आया दरवाज़े से एक पगडंडी पूर्व की ओर को गई थी उसी पर चल निकली क़रीब दोसौ क़दम के गई होगी कि एक चौराहा मिला बस यह सीधी सड़क चल निकली थोड़े ही देर में ख़ास चौक में पहुँचगई आहा ! क्याही अच्छा बाज़ार है जहां का हर एक मनुष्य तरहदार अपने रङ्ग ढङ्ग में निराला है, हज़ार की एक उत्तमताई तो यह है

कि-साहूकार के सामने साहूकार की दूकान है बज़ाजों की दूकान पर अजब तरह का सामान है ऐसेही अन्य २ दूकानदारों की इसी क़रीने से दूकानें हैं, चौक के गली कूचे निहायत तङ्ग हैं जिनको देखकर तबीयत दङ्ग है, इसी आनन्द को देखती हुई सखी आगे बढ़ी दो चार दूकानों के बाद अविनाशचन्द्र की दूकान मिली सामने ही बाबू अविनाशचन्द्र बैठे नज़र आये (हमारी) सखी तो बाबूजी को पहिलेही से जानती थी इसी कारण तुरन्त पहिचान लिया, और सविनय प्रणाम करके पत्र अपनी जेब से निकाल कर बाबू अविनाशचन्द्र को दिया।

पत्र को लेकर बाबूजी ने पढ़ना आरम्भ किया, पत्र में यह लिखा था कि:—

प्रियबल्लभ ! प्राणाधार ! जीवनधन-

प्राण ! नीतिनिपुण ! ममानसराजहंस ! ममनेत्रचकोर ! प्यारे, अविनाशचन्द्र जी चरण कमलेषु !

प्यारे ! जिस समय से आप इस अभागिनीको छोड़ कर अपने भवन को पधारे तबसे इस दासी को खाना पीना नहीं भाता दिन रात आपके चरणोंकी लौ लगाये हुए चकोर की भांति आपके आने का मार्ग जोह रही हूं और मेरा तो हाल इस प्रकार है जैसे किसीने कहा है कि:—

॥ शैर ॥

हाय किससे कहूं यह हाल अपना।
और सुनाऊँ किसे मलाल अपना॥
टूटी एक जान पर क़यामत है।
सख़्त मुश्किलहै और क़बाहत है॥

फ़ुरक़ते यार ने सताया है ।
ख़ाक में बेतरह मिलाया है ॥
दिल है बेचैन जान बेकल है ।
हाय कैसी पड़ी ये हलचल है ॥
अश्कबारी में दिन गुज़रता है ।
सरसे यह जिन्न कहीं उतरता है ॥
जब से दिल मुब्तिलाए यार हुआ ।
तीर उल्फ़त जिगर के पार हुआ ॥
एक क़ासिद भी हमने भेजा है ।
यह नसीब आज़मा के देखा है ॥
फिर के क़ासिद अभी नहीं आया ।
यार की कुछ ख़बर नहीं लाया ॥
हद से गुज़री है अब परेशानी ।
जान को है बला की हैरानी ॥
मोहबस वह मेरे क़रीब होजाय ।
वस्ल उसका मुझे नसीब होजाय ॥

क्यों फ़लक कबतलक सतायेगा।
और यों कबतलक रुलायेगा॥
करता है चर्ख़ ज़ुल्म और बेदाद।
करदिया किस क़दर मुझे नाशाद॥
अब किसी और सू निकल जाऊँ।
की बिगड़ती हुई सँभल जाऊँ॥
दिल में एक ख़ार ग़म टपकता है।
अश्क बन बन के ख़ूं टपकता है॥
देखिये आगे इसके क्या होगा।
पेश तक़दीर का लिखा होगा॥
दिन गुज़रता है बेक़रारी में।
रात कटती है आहो ज़ारी में॥
ज़िन्दगी का मज़ा ख़राब हुआ।
आख़िर यूँही मेरा शबाब हुआ॥
वो असर आह हो गई अपनी।
हाय तक़दीर फिरगई अपनी॥

कुछभी तुझको ख़बर नहीं क़ातिल।
हम हुए तेरे नाज़ के बिसमिल॥
जान जाती है तेरी फ़ुरक़त में।
यह मज़ा पाया हाय उल्फ़त में॥
किसक़दरादिलको अपने वहशत है।
रंजोग़म की बड़ी मुसीबत है॥
है तेरा ही ख़याल आंखों में।
फिर रहा है जमाल आंखों में॥
इश्क़ ने तेरे करदिया मजबूर।
पड़गया है कलेजे में नासूर॥
हाय तेरी बला से मरजायें।
काम बस ख़ुदकुशी का करजायें॥

वही अभागिनी चन्द्रमुखी।

पत्र पढ़ने के पश्चात् अविनाशचन्द्र थोड़ी देर तक विचारते रहे फिर कर्कश स्वर से बोले कि हे सखी! मैंने तुम्हारी राजकुमारी

को हरचन्द मना किया कि मेरे प्रेम से बाज़ आ परन्तु उसने एक न माना मैं अपना प्रण सुना चुका हूँ। खैर देखा जावेगा वहां से उठे और सखी को साथ आने का इशारा किया, दूकान से सटा हुआ बाला-ख़ाना था अविनाशचन्द्र वहां को गये गो कि कमरा छोटा है परन्तु अपने ढंग का निराला ही है उसी में एक ओर को मेज़ और कुरसियें क़रीने से लगी हुई थीं वहां पर जाकर एक कुरसी पर बैठ गये और चाबी को जेब से निकाल कर दराज़ को खोला उसमें से काग़ज़ निकाल कर पत्र का जवाब लिखना आरम्भ किया॥

श्रीमती राजकुमारी चन्द्रमुखी जी! पत्र आपका मिला बांचकर बड़ा खेद हुआ तुम्हारी बुद्धि कैसी घृणित है मैंने तुम को

पहिले भी समझाया था पर तुम ने नहीं माना बृथा पत्र लिखने का कष्ट उठाया मैं विना अपने मित्रों की सम्मति के कोई कार्य न करूंगा, हां मैंने आनेका जो वादा किया था सो शाम के समय में चोर दरवाज़े से आऊंगा फिर आपको उस दिन की कहानी सुनाऊंगा।

भवदीय—

अविनाशचन्द्र।

सखी को पत्र देकर विदा किया और आप उसीसमय अपनी मित्रमण्डलीमें गये, कि जहां पर शामको साढ़े तीनों यार एकत्र हुआकरतेथे। वहां पर गये और अपने मित्रों से मिल कर अतिहर्ष के साथ वार्तालाप करने लगे॥

बाबू श्यामाचरण—कहो यार अविनाशचन्द्र! कोई नवीन बात है?

अविनाश-हां! महाशय! बात तो ऐसीहै।

गोपालदास-हां! हां! कहो भाई क्या बात है कि जिसके कारण तुम ऐसे उदास हो?

शिवगोविन्द-तब हीं तो पैर लड़खड़ाते से पड़ते हैं।

अविनाश-इस समय एक आवश्यकीय कार्य को आपके सन्मुख प्रस्ताव करता हूं, आप महाशयों को योग्य है कि उचित ही सिखावन दीजिये। सुनिये, जिस राजकुमारी चन्द्रमुखी ने उस दिन बागमें मुझ से अपना प्रेम प्रकट किया परन्तु इस दास ने सर्वथा अस्वीकार ही किया था और आज भी उस का पत्र आया है कि एकबार आप यहां हो जावें सो आप लोगों की क्या सम्मति है?

गोपालदास-मित्र! यह बात तो सब ही पर प्रकट है, कि-परस्त्री से सम्भाषण करना

निषेध है। और स्त्रियों के चरित्र तो आपने बहुत ही इतिहासों में पढ़े होंगे फिर भला मैं किस प्रकार से कहूं, कि, तुम वहां जाओ, हां ! एक बात है यदि तुमने कह दिया हो कि मैं आऊँगा तो जाना भी ज़रूरी है पर उसके प्रेमजाल में न पड़ना नहीं तो उमरभर छुटकारा न होगा॥

शिवगोविन्द-हां ! जाने में कोई हानि नहीं है परन्तु "स्त्रीचरित्रं पुरुषस्य भाग्यं" इसको स्मरण रखना !

बाबू श्यामाचरण-भाई ! यह सब बातें तो हैं परन्तु यदि वह इन से सच्चा प्रेम करती है तो यह चन्द्रवदनी से कैसा प्रेम करते हैं ? अब जान लेना चाहिये यदि इनका भी चित्त प्यारी के बिरह में डूबा है तो यह शिक्षा भी व्यर्थ है। और यह हो भी कैसे सक्ता है, मेरी

बुद्धि के अनुसार अब इनको उस कोकिल बैनी के प्रेम की परीक्षा लेनी चाहिये कि-उस का प्रेम कैसा है, यदि वास्तव उस पिकबैनी का प्रणय सच्चा है तो अवश्य ही ग्रहण करना चाहिये क्योंकि लोगों की ऐसी भी कहावत है कि यदि स्त्री स्वयंही प्रेम प्रकट करके रति की इच्छा करै तो उस को अङ्गीकार करना योग्य है ऐसा न करने से पुरुष नरक में वास करता है. इस बातके सुनने पर सब मौन होगये थोड़ेही देरके पश्चात सबों ने यह बात कही कि मधुरभाषिणी के प्रेम की परीक्षा होने पर इसका विचार करेंगे, इस समय तो अविनाश को जाना ही चाहिये, कारण कि-वह इनके आने का मार्ग जोहरही होगी इससे विलम्ब करना ठीक नहीं, मित्रों की अनुमति से अविनाश घरको आये और

भोजन आदि से निबटकर कपड़े पहिने और एक पिस्तौल एक छुरी अपने पास लेली घड़ी निकाल कर समय देखा तो मालूम हुआ कि १० बजनेवाले हैं। अविनाश ने बहुत तेज़ी से घर के बाहर होकर पश्चिम ओर की राह ली, अनुमान चारसौ क़दम जाने पर एक चौराहा मिला, वहां से एक राह दक्षिण को गई थी उसीपर चल निकले, थोड़ी दूरके जाने पर बाग़ की छहरदीवारी मिली कि जिस के देखने से अविनाश ठिठुके और दीवार को बड़े ग़ौर से देखने लगे १५ मिनट तक देखने पर दीवार में बहुत बारीक दर्जसी मालूम हुई अविनाश ने तुरन्त दर्ज पर हाथ रख कर ख़ूब ज़ोर किया, कि-अकस्मात् तख़्ता नीचे को दबा और एक बहुत सुन्दर लट्टू मिला लट्टू को पकड़ कर ख़ूब घुमानेसे

एक प्रकार का कड़ाका हुआ शब्द के होतेही दरवाज़ा खुला हमारे बाबू साहब इसी दरवाज़े से होकर नज़र बाग़ में दाख़िल हुए कि जो महल के बिल्कुलही निकट था बाग़ सब प्रकार हरा भरा है।

पाठक महाशय! चलिये हम आप को चन्द्रमुखी के पास पहुँचाते हैं कि-जो कामबाणों से पीड़ित एक शय्या पर पड़ी करवटें बदलती है, आज वह कान्ति नहीं जो मुख सदा कमलकी समान खिला रहताथा आज वह मलीन है कारण यही है कि प्यारे के वियोग ने बहुत ही सताया है जिन महाशयों को कभी ऐसा अवसर प्राप्त हुआ होगा वह ही जान सकते हैं कि-वियोग क्या वस्तु है॥

चन्द्रमुखी—सखी रामप्यारी अभीतक प्यारे अविनाशचन्द्र नहीं आये क्या कारण

है ? क्या मुझे इसही बिरहरूपी अग्नि में जलना पड़ेगा भला एकबार तू बाग़ में जाकर देखआ शायद वह बाग़ में चोर दरवाज़े के मार्ग से आते हों॥

रामप्यारी––जो आज्ञा कहकर बाग़ की ओर को गई तो देखा कि जहांपर चमेलीका चमन बना है। वहांही बाबू अविनाशचन्द्र टहल रहे हैं। सखीने और निकट जाकर प्रणाम किया और कहा कि आपकी बाट तो राजकुमारी बड़ी देर से देख रही है॥

अविनाश-मैंभी हाज़िर हूँ तुम्हारे आने की प्रतीक्षा करता था।

रामप्यारी–श्रीमान् आप मेरे साथ आवें। अविनाश और सखी रामप्यारी दोनों महल की ओर चले सखी बहुत चतुर थी वह इन को ऐसी राह से लेगई कि-जहांपर पहरेदार

इत्यादि कोई भी न था कई एक मकानोंको लाँ-
घते हुए एक ऐसे क़मरे में पहुंचे कि-जहांकी
शोभा लिखने को लेखनी में शक्ति नहीं परन्तु
इतना तो अवश्यही कहेंगे कि- कमरा बहुत
बड़ा है, उसमें यदि फ़र्शकी ओर को देखते हैं
तो संगमरमर और संगमूसाही नज़र आता
है, शीशे आलात को तो कहनाही क्या था,
जिसके कारण कमरा पूर्ण रीति से सजा है,
उसही में एक ओर को मसहरीपर चन्द्रमुखी
मुरझाये पुष्प की समान पड़ी है पैरकी आहट
पाकर राजकुमारी ने शिर उठाया तो सामने
अपने परमप्यारे को पाया,. फिर क्या था मारे
हर्षके हिंचकी बंधगई मुखसे एक शब्द भी
न कहसकी परन्तु चित्तको सँभालके यह राग
गाना आरम्भ किया।

राग-क़ायम रहे हमेशा आलमशबाब का।

देखो बहार कैसे परदा नक़ाब का ॥ १ ॥
तेरे सिवा जहांमें मतलबके सब मशीर ।
साथी नहीं हमारा कोई अजाबका ॥ २ ॥
तड़पाकिये मकांपर कल आपके बग़ैर ।
जैसे कोई पियासा बेताब आबका ॥ ३ ॥
इस चेहरे से रोशन सारा जहान है ।
फीकाहुआनिहायत दिलमाहताबका ॥४॥
दिलकीमुरादादिलसेदिलदार हरिविलास ।
अबतो फ़ुजूल प्यारे करना हिजाबका ॥५॥

सखी ने कुमारी को प्रेम में तन्मय देख कर तुरन्त एक बहुमूल्य कुरसी लाकर रखदी अविनाश उस पर बैठकर राजकुमारी की दीन दशा को देख मनहीं मन विचारने लगे कि—अब क्या करना चाहिये इतने में राजकुमारी ने गद्गद स्वरसे कहा कि यदि आज इस समय आप दर्शन न देते तो इस अभा-

गिनी के प्राण पयान कर जाते आज आपने मेरे ऊपर बड़ी अनुग्रह की।

अविनाश-मैंने तो तुम्हें प्रथम ही समझाया था कि मैं परस्त्री से प्रेम नहीं करता और जिस कहानी को उस दिन तुम से कहा था उसी के पूर्ण होने पर सब बातें तुमको स्वयं ही विदित होजावेंगी॥

राजकुमारी चन्द्रमुखी--अच्छा प्रथम आपकी उस कहानी को सुनलूं फिर जो कुछ मुझे कहना है वह मैं आप दीन होकर विनय करूंगी॥

अविनाशचन्द्र-राजकुमारी सुनो "घोड़ों को तो बृक्षों से बांध दिया और आप दोनों वहीं पर ज़ीनपोश बिछाकर लेट रहे दश पांच मिनट थकावट को दूर किया होगा कि पूर्व की ओर से बीणा विनिंदित किसी रमणी

के गाने का कण्ठस्वर सुनाई दिया, गान को सुनते ही राजकुमार चिहुकर उधर ही को देखनेलगे ।

मन्त्री-राजकुमार ! इस समय आप क्यों इधर उधर को उचाट चित्त से देखरहे हो ॥

राजकुमार-भाई ! बात तो वास्तव में सत्य है पर आप भी तो पूर्वदिशाकी ओर को ध्यान कर सुनें यह किस रमणी का स्वर है दोनों उसी ओर को ध्यान देकर सुनते हैं ॥

राजकुमार-मित्र यह गाना तो मन को अतिप्रिय प्रतीत होता है जिस से मेरा मन उधर ही को आकर्षित हो रहा है, मैं इस गानेवाली को जबतक न देखूंगा तबतक मुझे चैन न पड़ेगा इससे अब मुझे जाने को कह दीजिये । यदि आप अस्वीकार करैंगे तो मैं प्राण देदूंगा । मन्त्रीपुत्र इस बात से अति

घबराया और कहने लगा कि हे स्वामिन्! आप इस हठ को छोड़ देवें इसमें दुःख ही भोगना पड़ेगा। कुमार हठ करके कहने लगे मैं अवश्य ही जाऊँगा॥

मन्त्री-राजकुमार की बात से चुप होगया, दश मिनट के बाद बोला कि प्रभु! यदि आप नहीं मानते तो यह दास चलनेको तैयार है॥

राजकुमार-सहर्ष हां भाई यह तो ठीक ही था न कि उसमें विघ्न डालना। इतने में फिर वही मधुरध्वनि से यह ग़ज़ल गाने की आवाज़ आई:—

बजुज़ इसके कहां जीने की अब उम्मीद है मुझको। लबे शीरीं में बिलकुल लज़्ज़ते तौहीद है मुझको॥ यही मेरी दुआ और इतनीही फ़हमीद है मुझको। मिलादे लबसे लब मेरे

वही फिर ईद है मुझको॥ मिलै उसके दहन से जब दहन मेरा तो जीजाऊँ। तमाशा इश्क़ का तुमने न देखा हो तो दिखलाऊँ॥ दहाने यार की लज़्ज़त अगर्चे कुछ भी मैं पाऊँ। तो उठ्ठेलाश मेरी क़ब्रसे ज़िन्दा मैं कहलाऊँ॥ बुलाओ उस मसीहाको मेरी अब जान जाती है। जिलाये जल्द मुझको वह नहीं तो शान जाती है॥ मैं आशिक़ हूं उसीके इश्क़ की अब आन जाती है। मिलादे लब नहीं तो जान और पहिंचान जाती है॥

ग़ज़ल के सुनते ही उधर ही को चलदिये कि जहां से गाने की आवाज़ आती थी सौ क़दम गये होंगे कि सामने ही एक नवयौ-वना स्त्री एक पत्थर की चट्टान पर बैठी है, राजकुमार जब निकट गये तो रमणी ने शिर ऊँचा करके इनकी ओर को देखा और मन

कि भाव को छिपाकर बोली कि महाशय आपका आना कहां से हुआ--

राजकुमार-हे सुन्दरी ! मैं बिदेशी हूं अपना पता आपको क्या बताऊं हां इतना तो अवश्यही कहूंगा कि इस समय में एक बन-बासी हूं आपका वीणा बिनिन्दित गान मुझे यहां खींच लाया है सो हे पिकबैनी ! आप अपना परिचय दीजिये।

स्त्री-मैं आपको अपना परिचय क्या दूं यदि आप मेरे आतिथ्य को स्वीकार करैं तो स्वयंही सब बातैं ज्ञात होजावेंगी आप कही चुके हैं कि मैं विदेशी हूं इसही कारण मेरी प्रार्थना है, कि-आज दिन मेरे स्थान को सुशोभित कीजिये यहांसे बहुतही निकट है। राजकुमार प्रेम भरी बातैं सुनकर पिघल गये और बोले कि यदि आपका स्थान निकट है

तो आज वहीं सही आपका कहना हमें सर्वथा शिरोधार्य है !

स्त्री-तो आप चलें क्योंकि-दिन अब थोड़ा ही रहगया है, राजकुमार बहुत अच्छा कहकर चलने पर तैयार होगये । और मन्त्री की ओर को संकेत करके कहा चलो भाई आज आपके यहांही विश्राम करें कल देखाजावेगा मन्त्रीपुत्र से कहकर आप उस परमसुन्दरी के साथ होलिये लगभग आधमील जानेपर उस रमणी ने ताली बजाई तुरन्तही चार मनुष्य निकल आये स्त्रीने पीछे आने का इशारा किया अनुमानन् ५० ही क़दम पर एक आलीशान बाग़ मिला, जिस को देखकर राजकुमार चौंधागये हां ! वह बाग़ इसीप्रकार का था फाटक पर जातेही रमणी ने सीटी बजाई आवाज़ होने के साथही झन २ करता

हुआ फाटक खुला तो बाग़ के अन्दर औरही शोभा दृष्टि पड़ी बाग़ के चमन क्याही उत्तम रीति से बने हैं और पेड़ों की रौस तो देखने ही योग्य है बाग़ के मध्य में बहुत बड़ा आलीशान कमरा बना हुआ है उसी के सामने चबूतरा भी संगमरमर का है और बीच में फ़व्वारा उसकी शोभा को दूनां कररहा है, स्त्री भी इसी कमरे में पहुँची जिसका ज़िक्र है अहा हा ! ! क्याही बिचित्र कारीगरी हैं छतों में किस ख़ूबसूरती से मोरों का बन में बिहार करना बनाया है।

राजकुमार-यह सामान देखकर मन्त्रीपुत्र से बोले कि-यह कोई राजकन्या सी प्रतीत होती है, मन्त्रीपुत्रने कहा हे.स्वामिन् ! इस में आपको धोखा मिलेगा मैं इस समय कुछ निश्चय भी नहीं करसक्ता। वह स्त्री राज-

कुमार को एक छोटे कमरे में स्थान देकर आप चली गई, थोड़ेहीं बिलम्ब में एक अनुचर भोजन का सामान लेकर आया, मन्त्रीपुत्र ने तो नहीं खाया पर राजकुमारने थोड़ा भोजन किंया और कुछ थोड़ा सा पानी पिया फिर जाकर शंयन करने लगे पन्द्रह २० मिनट में घोर निद्रा देवी की गोद में बास किया परन्तु मन्त्रीपुत्र तो पहिलेही से होशियार था वह जागता रहा तथापि कुछ २ झोंके लेने लगा।

अनुमान १२ बजे होंगे कि—सहसा २ आदमी इसी कमरे में आये एक उनमें से बहुत फुरती कर मन्त्री के पुत्र पर टूटा और देखते ही देखते उसको लेकर दोनों वहां से चले गये। हा दैव! तेरी माया अपरम्पार है, जिस मन्त्रीपुत्र के भरोसे पर राजकुमार के सम्पूर्ण

कार्य चलते थे आज उसी का बियोग हुआ और बियोग कैसा कि—जिसकी ख़बर भी नहीं? घड़ी की जगाज़ी (अलारम) ठीक १ बजने पर घन घन का शब्द करने लगी, शब्द का होना था कि—राजकुमार की आंखें खुलीं तो मन्त्रीपुत्र को वहां न देखकर मन में अति दुःखित हुआ, अवाक्‌चारों ओर कठ-पुतली की नाईं देखने लगा इतने में धड़से किवाड़ खुले और वही पूर्वपरिचित रमणी मन्द मुसकानसे आती दृष्टि पड़ी, क्रमशः अति निकट आई और बांकी कटाक्ष से नि-हारकर राजकुमार से बोली कि—प्यारे राज-कुमार! आप कैसे उदास बैठे हैं, यह दासी सबप्रकार से आपकी सेवा करनेको प्रस्तुत है, इतने वचन के सुनतेही राजकुमार पिघल गये सुन्दरी के प्रेमी तो यह पहिलेही से थे

अब और भी फिसल पड़े जैसे किसी ने कहा है:—

॥ दोहा ॥

व्यथाकथा लिखिये कहा, सुनिलीजे मन मीत।
चित्त ठिकाने है नहीं, जब से लागी प्रीत ॥
फांसी प्रीति लगाय के, मो मन लियो चुराय।
अब तो तेरे बस पर्यो, छूटि सकै नहिं हाय ॥

प्यारी! इस दासको भी आपसे उज्र नहीं पर यह तो बता कि-मेरे प्यारे मन्त्रीपुत्र कहां हैं,

सुन्दरी—उनको तो मैं भी नहीं जानती आप उनको क्या करेंगे उनके होते हुए आप को सबप्रकार की चिन्ता रहेगी, और मुझ से बात चीत करने में भी संकोच रहेगा इससे आप उनकी ढूंढ़ भाल न करें, क्योंकि वे स्वयंही बिना कहे आपसे चले गये, यदि

उन्हें आपसे स्नेह होता तो अवश्यही कह कर जाते।

रमणी के मुखसे ऐसे बचन सुनकर राजकुमार कुछ पूछाही चाहते थे कि—इतने में सुन्दरी फिर बोली यदि आप को मुझपर दया करना है तो उनका ध्यान छोड़ दीजिये वह इसबातपर राज़ी न होंगे कि—आप मेरे प्रेमपात्र हो, हे मनमथस्वरूप! आप जो चाहें सो करें, राजकुमार को सुन्दरी की बातों पर विश्वास आगया और प्राणों से भी प्रिय मन्त्रीपुत्र का ध्यान जाता रहा!

पाठकगण! आपभी विचारिये कि—हमारे राजकुमार की कैसी बुद्धि मारी गई; कारण क्या! केवल मनमोहिनी की प्रेमभरी कटाक्ष, जिसमें फँसकर बाल्यावस्थाके प्रेमकी बिल्कुल ही भूलगये अभी क्या आगे चलकर देखना।

राजकुमार और मनमोहिनी दोनों हाथ में हाथ डाल कर दूसरे कमरे की ओर को चले दोही तीन दरवाज़े के बाद कमरे के मध्यभाग में पहुँचगये रमणी ने मध्यभाग में खड़ी होकर आहिस्ता से एककील पर पैर रक्खा साथही धड़ाके की आवाज़ हुई, अनुमान १५ या २० मिनट तक यह आवाज़ कमरे में गूँजती रही, साथही तख़्ता हटा और एक सिंहासन निकल आया, इस ब्यापार को देखकर राजकुमार अति चकित हुए पर क्या करें वहां तो दूसरी मार थी। मन-मोहनी बड़े प्रेम के साथ राजकुमार का हाथ पकड़कर उसी सिंहासन पर जा बैठी और बोली, हे प्यारे ! मैं तो आप के चरण की रेणु हूं, इस दासी को आप पर प्राण तक देना स्वीकार है, आपका घर है, आप यहां

आनन्द से रहैं और दिल बहलाने को तो मैं मौजूद हूं, ऐसी २ उस सुन्दरी की प्रेममयी बातें सुनकर राजकुमार फिसल पड़े और बोले तो मैं भी आपपर जानतक वार सक्ता हूं, आपके कहने को कभी नहीं टालूंगा।

मनमोहनी-यह मुझे कैसे निश्चय हो, कि आप मेरे सच्चे प्रेमी हैं।

राजकुमार-प्यारी अभी परीक्षा करलो।

मनमोहनी-राजकुमार! अपने बचन को याद रखना भूलना नहीं, मैं आपकी परीक्षा करती हूं।

राजकुमार-बहुत अच्छा, प्यारी ईश्वर को साक्षी देता हूं मैं हरप्रकार से मौजूद हूं रमणी ने तुरन्त ताली बजाई, तुरन्त ही दो हबशी मन्त्रीपुत्र को मुश्कें बांधे हुए लेकर हाज़िर हुए।

राजकुमार-मनही मन सोचने लगे और कहने लगे कि क्या मैं स्वप्न देख रहा हूं, नहीं, नहीं, मैं जागता हूं, ! मैं अपने प्यारे मित्र को बन्दी देखता हूं।

मनमोहनी-राजकुमार ! पहिली परीक्षा यह है कि इस मन्त्रीपुत्र का शिर आप अपने हाथ से काटें तो मुझे निश्चय होजावे कि आप मेरे प्रेमी हैं।

इस बातको सुनना था कि- मानो राजकुमार पर वज्रपात हुआ और अचेत होगये।

मनमोहनी-फिर कुमार को होश में लाई और बोली क्या इस कार्य से इन्कार है ?

राजकुमार- (भर्राती आवाज़ से) अरे चाण्डालिनी ! क्या आतिथ्य और प्रेमी होनेपर यही कार्य साधन कियाजाता है जो तूने किया है ! इस कार्य से मुझे सर्वथा

इन्कार है हाय! अपने प्यारे का...........
इतना कहते २ अचेत होगये, तब उस पापिनी ने ऊर्ध्व श्वास लेकर कहा कि इन दोनों को एकही स्थान में ले जाकर क़ैद करो तब इनकी बुद्धि ठिकाने होगी।

इतनी कथा अविनाशचन्द्र ने कही तो घड़ी पाकिट से निकालकर टाइम देखा और राजकुमारी से कहा कि-चार बजने में चार मिनट बाक़ी है अब एक ही घण्टा और है अभी कहानी बहुत बाक़ी है इससे सूक्ष्म रीति से आशय उसका समझाये देता हूं अभीतक दुश्चरित्रा के हाल देखो कि जिसकी बातों में आकर राजकुमार का आजन्म छुटकारा न होता परन्तु जिस मित्र का बध उन्हें असह्य हुआ था उसी की बदौलत फिर अपनी राजधानी को लौट आये इससे

हे राजकुमारी! मैं स्त्रीमात्र से घृणा करता हूं बस आप इसही उदाहरण से जान लीजिये विशेष कहने की आवश्यकता नहीं है।

चन्द्रमुखी-हा प्राणनाथ! क्या ऐसा अपराध बना है जो आप एक दृष्टान्त सुना-करही मुझको बिसारा चाहते हो ऐसी रुखाई आप को शोभा नहीं देती किसी कवि ने कहा है कि-

॥ दोहा ॥

नेह नीर मझधार में, विरह समीर समाज।
तरनी लौं तरनी भई, बूड़्यो चाहत आज॥
तद्यपि ग्रह तारे गगन, जगमग जगमग होत।
यद्यपि चखन चकोर की, चढ़ी चन्दकी जोत॥
उत भूले सुध लेत ना, इत भूले न भुलात।
भूलेई सुधि जो करी, वे सुधि सुधि है जात॥

कवित्त ॥

लोक बेदलाज करि कीजै ना रुखाई एती, द्रविये पियारे नेक दया उपजायकै। बिरह बिपति दुख सहि नहिं जाय कहि, जाय नाहिं करौं कछु मन बिलखायकै ॥ हरिश्चन्द्र अब तो सहारी नहीं जाय हाय, भुजन बढ़ाय बेगि मेरी ओर आयकै। बिरुद निभाय लीजै मरत जिवाय लीजै, हाहा प्राण प्यारे धाय लीजै गर लायकै ॥

हे जीवनधन प्राण! क्या मुझे इसी दशा में आप छोड़ जावेंगे "मनही मन हे ईश्वर! मैं बड़ी अभागिनी हूं हे ज़गदीश्वर! हे करुणानिधान! इस पापिनी पर इतना क्यों कुपित होते हो? हे रसिकबिहारी! आज आप अपने नाम की महिमा को सत्य कर

दिखाइये, क्या प्राणनाथ को मुझ पर दया नहीं आती! नहीं नहीं अवश्य ही आवेगी, यदि मेरा सच्चा प्रेम है तो अवश्य ही अपने हृदय में अधिकार देवेंगे" प्रकाश-नाथ! अब अनुग्रह करके मेरे हृदय की दाह को शान्त कीजिये॥

अविनाश-मन ही मन हे ईश्वर! क्या करूं? यह बाला तो बहुत अधीर हो रही है, यदि इन्कार करता हूं तो यह प्राण त्याग देगी और विना अपने मित्रों की सम्मति के स्वीकार भी नहीं कर सक्ता, क्या करूं प्रकाश में कुमारी अधीर होने की कोई बात नहीं है, जो इतिहास मैंने आप को सुनाया है उस से आप मेरे आशय को जानही गई होंगी यदि आप मेरे इस शङ्का का समाधान कर देवेंगी तो इस विषय में मित्रों से सम्मति करूंगा।

कुमारी-हे प्राणनाथ ! सब स्त्री ऐसी नहीं होती हैं, और न सब पुरुषही ऐसे होते हैं, हां इस बात को मैं मानती हूं कि उसने किया क्या, परन्तु आपही बिचारें कि-क्या स्त्री और क्या पुरुष सबही में कुछ गुण दोष होता है, वह जिसमें बहुतायत होती है, वही माना जाता है।

अविनाश-हे राजकुमारी ! आपका यह कहना बहुत सत्य है परन्तु जो नारी मित्रघा-तिनी होती है फिर उसका विश्वास कैसे करें, क्या आपको इस दृष्टान्त से सन्तोष नहीं हुआ।

राजकुमारी-हे प्यारे, अविनाश ! मेरी तो दशा इस प्रकारसे है-

॥ सवैया.॥

मीन मरे जल के बिछुरे जल नेक दया

नहिं मीन को आनै। चातक स्वाति कि बूंद रटै अरु स्वाति न चातकही पहिंचानै॥ चन्द्र की चाह चकोर मरे पै चकोर कि चाह न चन्द्रमा जानै। ऐसे मित्र सों प्रीति लगैये तो प्राणहु जाय पै मित्र न मानै।

प्राणनाथ! सब स्त्री एकसी नहीं होतीं, यदि आप को कष्ट न हो तो एक कहानी मैं भी आप को सुनाऊं।

अविनाशचन्द्र—कहो २ कुमारी आपकी कहानी को मैं भी सुनलूं यदि मेरा समाधान करदोगी तो अपने मित्रों की अनुमति से सब कार्य स्वीकार करूंगा।

राजकुमारी चन्द्रमुखी बोली सुनो प्यारे अविनाशचन्द्र—प्राचीन समय में एक देव-पुरीनामक नगरी थी वहां के राजा के एकही पुत्र था जिसका नाम रतनसिंह था, एक

दिवस राजा मय लश्कर के शिकार को गये दैव-
योग आखेट में उन से उनकी सबही फ़ौज
छूटगई-तब तो राजा रतनसिंह बहुत चकित
हुए पर करते ही क्या ? समय भी दो पहर
का वैशाख की धूपसे वृक्ष कुम्हला गये
हैं वैसी दशा इस समय राजा रतनसिंह की
है प्यास से अति व्याकुल हो पूर्वदिशा को
जारहे हैं हाय! यह कैसी भूमि है कि जहां पर
तालाब पोखरा कुछभी नहीं हैं, कुमारकी तृषा
से चलने की गति कम होगई है, वह चन्द्र-
मुख सूख गया, थोड़ी दूर और जाके एक
सघन झाड़ी के तले बैठकर पानी की चिन्ता
करनेलगे कुछही देरके पश्चात् जो दक्षिण
की ओर को निगाह उठाई तो पंक्षी उड़ते
देख पड़े बुद्धिमान् रतनसिंह ने जान-
लिया कि यहांपर अवश्यही जल मिलेगा

यह विचार के उसी ओर को चलदिये मीन-वत् व्याकुल राजकुमार को इतना मार्ग च-लना बहुत ही कठिन जान पड़ा मार्ग में कई स्थान पर बैठ उठकर वहांतक पहुँचे, देखा तो सत्यही अति सुन्दर तालाब लहरें लेरहा है उसके बायें और दायें ओर बहुत रमणीक कुञ्ज है तहां मनुष्य की तो कौन कहे देवताओं की भी इच्छा उस स्थानके देखने की होती है।

वाचक वृन्द! हमारे रतनसिंह ने पहिले तो अपना श्रम दूर करने के लिये सरोवर पर जाकर हाथ मुँह धोया और जल पिया जब कुछ चित्त शान्त हुआ तो सरोवर की सी-ढ़ियों पर टहलने लगे कि-जहां से कुञ्ज नि-कट थी कुमारके जी में आई कि चलकर इस बायें ओर की कुञ्ज में घूमें अब बिचारते २ कुञ्ज के मुहाने पर जा पहुँचे अब हमको यहां

पर अपने पाठकों को यह बात बता देना आवश्यकीय है कि कुञ्ज के दरवाज़े पर जो दो पगडंडी हैं उनमें से जोकि दक्षिण दिशा की ओर कुञ्जों और घाटियों में पेंच खाती हुई राजकुमारी पुष्पवती के आराम बाग़को गई है वहां पर बहुत अच्छी एक कोठी कुमारी के रहने को उसके पिता जस-करणसिंहजी ने बनवाई थी-और जो सीधी सामने को गई है वह राजा साहबके दरबार और ख़ास महलकी है। हमारे कुमार रतन-सिंह भी दक्षिण की ओर को चले एकबार तो सीधे चित्तसे कुमार को भी कहना पड़ा कि आहा! क्याही बेल और बूटा तरहदार है जो राह चलतों के मन को मोह लेता है अनुमान १०० क़दम के जाने पर यह एक झाड़ी के तले बैठकर आराम करने लगे इन

की थकावट को तो आप पहलेही से जानते हैं श्रम दूर करने को लेटे थे कि निद्रा देवी का आवेश हुआ और उसीकी गोदमें शयन करने लगे इसी मध्यमें एक सखी पुष्पकुमारी वाटिका की सैर करने को आई थी उस की निगाह राजकुमार पर पड़ी देखतेही मोहित होगई और मनहीमन कहने लगी कि हमारी राजकुमारी अभी कुमारी है, यदि इस अ-परिचित पुरुष को देखती तो वह भी इसी पुरुष को अपना पति बनाने की चेष्टा करती हे ईश्वर ! संसार की सारी शोभा क्या आप ने इसी व्यक्ति को दी है मुखमण्डल को देख-कर मेरा मन बड़ा ही चञ्चल होता है गालों पर सूर्य भगवान् की किरणें कैसी भली मालूम होती हैं अब मैं बहुत शीघ्र जाकर अपनी राजकुमारी को यहां बुलालाऊं इस

अनुपम रूपको निहार कर नेत्रों को शान्त करूं, ऐसा स्वरूपवान् पुरुष तो आजतक मैंने नहीं देखा यह कहते २ सखी वहां से कुमारी के आरामगाह की ओरको चली किंचित् विलम्ब में सखी कुमारी के पास पहुंच गई और सारा वृत्तान्त कह सुनाया कुमारी पुष्पवती की अवस्था अभी १५ वर्षकी होगी रङ्ग गुलाबी शरीर से नाज़ुकपन और बातों से मधुरता मानो टपकी पड़ती थी स्वभाव की अति शान्त ऐसी कुमारी को सखी के वाक्य ने डामाडोल करदिया वह तुरन्त अपनी सखी सहेलियों को साथ ले पूर्व सखी के साथ उस स्थान को चली कि जहां पर वह लावण्यमूर्ति शयन करती थी चमन की पटरियों को लांघती हुई अति शीघ्रता से सबकी सब चलीं। अनुमान आध घण्टे के

भीतर ही भीतर कुमारी वहां पर पहुँच गई। फिर वही पहिले वाली सखी बोली कि—आप अकेली ही मेरे साथ आवें सबको यहां ही रहने दें पुष्पवती ने वहां ही सबको रुकने को कहा आप और वह सखी जिसने पहले आकर ख़बर दी थी दोनों पास पहुँचीं, चांद-वत् मुखको देखकर पुष्पवती मूर्च्छित हो पृथ्वी पर गिरपड़ी तब सखी ने अनेक उपायों से फिर कुमारी पुष्पवती को चैतन्य किया होश में आते ही पुष्पकुमारी बोली कि—प्यारी सखी किसी प्रकार से इस अनजान राजकु-मार को जगाना चाहिये।

सखी—प्यारी पुष्पवती यह तो सत्य है, शायद यह जगाने से अप्रसन्न हो।

पुष्पवती—हे सखी! देखो मैं एक उपाय

और करती हूं वह यह है कि-कुछ दो एक बिनती के पद सुनावें तब तो यह स्वयं ही जागेंगे यह कहकर यह गाना आरम्भ किया:-

भाती है मुझें सांवलीसी शकल यार की।
कौशलकिशोर दिलवरे दशरथ कुमारकी॥
राजीव नैन नेह भरे रैन के जगे।
झुक २ पलक गिरतीहै आलस खुमारकी॥
मुस्कान मन्द माधुरीपर वारूं लाख की।
किससे नज़ीरदे कोई उस गुल अनारकी॥
रघुवर किशोर दीनपै टुक कीजिये नज़र।
दानी शिरोमणि जानके तेरी पुकार की॥

वीणा विनिन्दित स्वर का गान कान में पड़ते ही कुमार रतनसिंह जागे; सन्मुख दो सुकुमारियों को देखकर मनमें अति आश्चर्यित हुए और दोनों की ओर को संबोधन

करके बोले कि-तुम कौन हो देवकन्या या राजकन्या ?

सखी—महाशय पुष्पवती की ओर इशारा कर के यह तो राजा जसकरनसिंह की राजकुमारी हैं और मैं इनकी दासी हूं यह तो हमारा परिचय रहा अब कृपा करके आप अपना परिचय दीजिये कि-आप किस राजधानी के राजभूषण हैं ।

कुमार रतनसिंह—हे सखी ! हम अपना परिचय आप लोगों को क्या देवें इस समय हम एक साधारण बनबासी हैं ।

सखी-नहीं नहीं कुमार आप ऐसा क्यों कहते हैं ।

राजकुमारी पुष्पवती—महाशय क्या पता

और नाम बताने में कुछ हानिहै। जो आप इतना संकोच करते हैं।

कुमार—हे राज़नन्दिनी! मेरा नाम रतन-सिंह है।

पुष्पवती—कुछ लजाती हुई तो आप यहां क्यों इतना कष्ट उठाते हैं आप मेरे स्थान को चलें वह भी स्थान आपही का है।

सखी—राजकुमार मुझे पूर्ण आशा है कि आप कुमारी के वचन का उल्लंघन न करेंगे "मनही मन में कोई ऐसी युक्ति होती कि हमारी कुमारी को यहही बर मिलता"। प्रकाश तो आप को आखेट में बड़ा कष्ट हुआ अब चलिये—स्थान पर विश्राम करियेगा।

कुमार—हे सखी ! यह आप की योग्यता है जो आप मेरा सत्कार करती हैं परन्तु आप भी तो बिचारैं कि एकान्त में बिना गृहस्वामी की आज्ञा मैं किसी प्रकार कुमारी के स्थान को नहीं जाऊंगा ऐसा करने में अपयश के सिवाय और कुछ हाथ न आवेगा, हां यदि राजा जसकरनसिंह बुलाते तो अवश्य जाता और यह होना बहुत कठिन है कि मैं आप के यहां रहूं और यह बात तुम्हारे महाराज को न मालूम हो।

सखी—हां महाशय. कहते २ रुकके कुमारी की ओर देख कर कहा कि आप क्यों कष्ट उठाती हैं आप स्थान को चलैं मैं राजकुमार को राज़ीकर अपने साथ लियेलाऊंगी।

कुमारी—एक ठंढी साँस लेकर—अच्छा मैं

जाती हूं क्यों, तुम्हारी इनकी बातों में त्रुटी पड़ती होगी, इस नोक झोक की बात कहकर कुमारी अपनी और सहेलियों को लेकर वहां से चली गई।

सखी—और राजकुमार रतनसिंह का वार्तालाप होना आरम्भ हुआ?

कुमार—हँसकर क्यों सखी क्या तुम्हारी कुमारी पुष्पका व्याह नहीं हुआ है।

सखी—क्यों साहब आप ऐसा प्रश्न किस निमित्त करते हैं?

कुमार—ऐसेही साधारण रीति से यह प्रश्न किया किसी कारण से नहीं।

सखी—यदि साधारण प्रश्न है, तो बताये

देती हूं कुमारी का ब्याह अभी नहीं हुआ है।

कुमार–मुस्कराकर आपकी कुमारी तो बहुतही सरलहृदया मधुरभाषिणी और सुन्दर है।

सखी–(एक अदासे सहास्य) क्यों महाशय ! आतिथ्य तो अस्वीकार है और साथमें सुन्दरता और प्रकृति की आप प्रशंसा करते हैं।

कुमार–हे सखी ! जो बात वास्तव में होती है वह कही ही जाती है।

सखी–यह आपका कहना सत्य है पर इस समय मुझे एक बात सर्वोपरि कहदेनी है परन्तु कहूंगी जब, आप शपथ खावें कि कहें न।

कुमार–सखी के इतना कहने पर आशय

को समझगये और बोले मैं ईश्वर को साक्षी करताहूं आप कहें वह क्या बात है।

सखी—हँस कर चलो साहब जो दशा आपकी है वही दशा उनकी भी है अर्थात् जैसे आप टहलते हैं वैसे वह।

कुमार—(एक ठंढी श्वास लेकर) सखी तुम चतुर हो तुमसे कोई बात छिपी नहीं है इसलिये मैं भी नहीं छिपाता आपकी पुष्पवती ने तो आतेही मुझे अपनी पुष्परूपी सुगन्ध से मोहित करलिया मैं अधिक क्या कहूं।

सखी—हां! हां!! यह तो मैं प्रथमसेही जानती थी, इसीकारण से मैंने कुमारी को यहां भेजदिया कि जिससे आप बातें करने में संकोच न करें अब कृपया आप मेरे साथ आयें।

कुमार—अच्छा चलो मैं चलने को तैयार हूँ बस फिर क्या था दोनों बात की बात में वहांसे चल निकले। अनुमान एक घण्टा घूमते और पुष्पों की शोभा को निहारते हुए जा रहे हैं कि—अकस्मात् यह ग़ज़ल गाने की आवाज़ कान में आई।

॥ ग़ज़ल ॥

उस मसीहासे ख़बर मेरी कोई करता नहीं।
दिल हुआ बेताब हैरां कैसे यह रहता नहीं॥१॥
रंज आलम में निहायत ग़म हुआ तेरे बिना।
एकदमभरका न मिलना दिलमेरा सहता नहीं२
इन्तिज़ारी में तुम्हारी रात महफ़िल में गई।
अश्क आंखों में भरा ये शर्मसे कहता नहीं।३॥
क्या रक़ीबों के सिखाने से क़दूरत आगई।
सख़्त दिल करना तुम्हें ज़ेबा कभी देता नहीं॥४॥

इतने में अविनाशबाबूने अपनी वाचघड़ी पें देखा तो पांच बजने में पांचही मिनट बाक़ी थे तब कहा हे प्यारी चन्द्रमुखी ! इस समय मैं जाता हूँ फिर किसी दिवस आपकी कहानी को सुनूंगा इस समय मेरी धृष्टता को क्षमा करना।

प्यारे वाचकवृन्द ! अब इस क़िस्से को यहां ही समाप्त करता हूं इसका बाक़ी हाल तीसरे भागमें देखना वह भी तैयार होरहा है।

॥ इति क़िस्सा साढ़ेतीनयार का दूसरा भाग समाप्त ॥